ग़ौसे आज़म हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी अलैहिर्रहमह

और ग्यारहवीं शरीफ पर मुशतमिल एक मुख़्तसर तहरीर|

ग्यारहवीं शरीफ

लेखक:

नासिर मनेरी

प्रकाशक:

मनेरी फाउन्डेशन, दिल्ली

मोबाइल न.9654812767

ई-मेलः nasirmaneri92@gmail.com

ग़ौसे पाक और ग्यारहवीं शरीफ

हिजरी सन का चौथा महीना रबीउल आख़िर कहलाता है| इस महीने की ग्या रह तारीख को मुसलमानाने आलम का बड़ा तब्क़ा ग़ौसे आज़म हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी अलैहिर रहमह की याद मनाता है| आप के विसाल की मुनासबत से इस दिन आप का उर्स मनाया जाता है| नज़्रव नियाज़ का एहतेमाम होता है| ईसाले सवाब की महफ़िलें मुनअक़िद की जाती हैं| और इस दिन को ग्यारहवीं शरीफ के नाम से मौसूम किया जाता है| हज़रते ग़ौसे आज़म को लोग ग़ौसे पाक और बड़े पीर साहब से भी जानते और पहचानते हैं| यहाँ आप की हयात व ख़िदमात पर मुख़्तसरन रोशनी डाली जा रही है|

इस्मे मुबारक:

आप का प्यारा नाम हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी है|

वालिदे माजिद:

आपके वालिद माजिद का नाम हज़रत अबु सालिह मूसा है|

वालिदा माजिदा:

आप की वालिदा माजिदा का नाम उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा है|

जद्दे करीम:

आप के दादा जान का नाम अब्दुल्लाह जीली है|

नाना मोहतरम:

आप के नाना जान का नाम अब्दुल्लाह सौमई है|

विलादत बासआदत:

आपकी विलादत बासआदत 1 रमज़ान 470 हि० को जीलान (ईरान) में हुई|

तालीम व तरबियत:

शुरुआती तालीम आपने जीलान में रहकर हासिल की| फिर ऊँची तालीम के लिए बग़दाद (इराक़) का सफर किया|

बैअत व ख़िलाफ़त:

आप को बैअत व ख़िलाफत हज़रत अबू सईद मख़ज़ूमी अलैहिर रहमह से हासिल है|

विसाले पुर मलाल:

आप का विसाले मुबारक 11 रबीउस्सानी 561 हिजरी को बग़दाद (इराक़) में हुआ और वहीं आप का मज़ारे मुबारक है|

ग़ौसे पाक का बचपन:

ऊँची शिक्षा के लिए जब आप ने बग़दाद जाने का इरादा किया तो चलते वक़्त आपकी माँ ने चालीस अशरफियाँ आप के जुब्बे की जेब रख कर सिल दीं और हर हाल में आप से सच बोलने का आप से वादा लिया| आप क़ाफ़िले के साथ जब पहाड़ी लाक़े में पहुँचे तो डाकुओं ने सारा सामान लूट लिया| एक डाकू आप के पास भी आया और पूछाः कुछ है? आप ने फरमायाः चालीस अशरफियाँ हैं| पूछाः कहाँ है? कहाः जुब्बे की जेब में सिली हैं| उस ने सोचा बच्चा मज़ाक़ कर रहा है| यूँ ही कुछ और डाकू आए उन्हें भी आप ने सच सच बता दिया| अख़ीर में आप को ड्कुओं के सरदार के पास ले

जाया गया| उस ने सिलाई खुलवा कर देखा तो सच मुच चालीस अशरफियाँ मौजूद थीं| सरदार को बहुत तअज्जुब हुआ| उस ने पूछाः लोग मुसीबत के वक़्त जान व माल बचाने की फिक्र करते हैं आप ने छुपाने की बजाय सच सच क्यों बता दिया? आप ने फरमायाः चलते वक़्त मेरी माँ ने हर हाल में सच बोलने का मुझ से वादा लिया था| लिहाज़ा मुझ से गवारा ना हो सका कि मैं अपनी माँ का वादा तोड़ दूँ| ये सुन कर सरदार ने कहाः ऐसे मुशकिल वक़्त में आप ने अपनी माँ का वादा नहीं तोड़ा और हम हैं कि सालहा साल से अपने पैदा करने वाले रब का वादा तोड़ रहे हैं| फिर वो ग़ौसे पाक के हाथ पर तौबा कर के नेक बन गया| सारा सामान भी वापस कर दिया और उस के सारे चेले भी नेक बन गए|

(मुलख़्ख़सन क़लाइदुल जवाहिर व बहजतुल असरार वग़ैरह)

करामाते ग़ौसे आज़मः

इंसानी अक़्ल के ख़िलाफ़ कोई बात किसी वली से पेश आए तो उसे करामत कहते हैं दूसरे बुज़ुर्गों की तरह हज़रते ग़ौसे पाक से भी बिइज़्ने रब्बी बेशुमार करामतें ज़ुहूर पज़ीर हुईं| आप के तज़किरा निगारों ने सिक़ह रावियों के हवाले से आप के बेशुमार ख़वारिक़े

आदात वाक़ेआत अपनी अपनी किताबों में दर्ज किए हैं| यहाँ उनमें से चन्द की झलकियाँ पेश की जा रही हैं

(1)आप ने बचपन में भी रमज़ान के दिनों में माँ का दूध नहीं पिया|

(2)चालीस साल तक इशा के वुज़ू से फजर की नमाज़ पढ़ते रहे|

(3)पैदाइशी अंधों, बर्स (सफेद दाग़) और कोढ़ी (कोढ़पन) की बीमारी वालों अच्छा कर दिया|

(4)मुर्दों को ज़िंदा कर दिया|

(5)चोर को क़ुतुब और नसरानी को अबदाल बना दिया|

(6)एक ही वक़्त में सत्तर जगह रोज़ा इफ़्तार किया|

(7)आप के दरबारी कुत्ते ने शेर को पछाड़ दिया|

(8)एक बूढ़ी औरत के कहने पर उस के इकलौते बेटे की बारह बरस की डूबी हुई बारात वापस ला दी|

(9)अपने वा’ज़ व नसीहत से बहुत सारे लोगों को हें रास्त पर लाए|

(10) अपने अख़लाक व किरदार से बेशुमार लोगों को कलमा पढ़ाया|

(क़लाइदुल जवाहिर व बहजतुल असरार वग़ैरह)

तालीमाते ग़ौसे पाक:

आप चूँकि अल्लाह के बर्गुज़ीदा वली थे और आप को अल्लाह ने लोगों को सीधी राह बताने के लिए भेजा था इस लिए आप लोगों को अच्छी अच्छी बातें सिखाते थे| आप की उन्ही तालीमात में से चन्द ये हैः

(1) अल्लाह से,

(2) उस के रसूल से,

(3) और नेक लोगों से मोहब्बत रखें|

(4) हर हाल में अल्लाह का शुक्र करें|

(5) उस की रहमत से कभी मायूस ना हों|

(6) उस पर भरोसा रखें|

(7) उस से डरें|

(8) उसी की इबादत करें|

(9) नमाज़ें पढ़ा करें|

(10) रोज़े रखा करें|

(11) साहिबे निसाब हों तो ज़कात दिया करें|

(12) इस्तिताअत हो तो हज ज़रूर करें|

(13) इल्म हासिल करें|

(14) उस पर अमल भी करें|

(15) दीन की ख़िदमत किया करें|

(16) उलमा की इज़्ज़त किया करें|

(17) हमेशा सच बोलें|

(18) झूट कभी ना बोलें|

(19) बड़ों की इज़्ज़त करें|

(20) छोटों पर शफ़क़त करें|

(21) ग़रीबों, फ़क़ीरों, यतीमों और बेवाओं की मदद किया करें|

(22) सब के साथ अच्छा बरताव करें|

(23) किसी पर ग़ुस्सा ना करें|

(24) किसी पर ज़ुल्म ना करें|

(25) सब के साथ भलाई करें|

(26) किसी के साथ बुराई ना करें|

(27) बुराई से बचें|

(28) गुनाहों से सच्ची तौबा करें|

(29) मुसीबतों पर सब्र किया करें|

(30) परेशानियों से घबराया ना करें|

(31) बड़ों की बातें मानें|

(32) छोटों को समझाया करें|

(33) दूसरों की ग़लतयों को माफ़ करें|

(34) बेहयाई व बेवफ़ाई से बचें|

(35) किसी पर हसद ना करें|

(36) रियाकारी और दिखावे से से बचें|

(37) तकब्बुर और घमंड ना करें|

(38) दिल में बुग़्ज़ व कीना ना रखें|

(39) लालच ना करें|

(40) कन्जूसी से बचें|

(41) ना शुक्री ना करें|

(42) किसी को नीचा ना समझें|

(43) किसी के बारे में बुरा ना समझें|

(44) किसी की चुग़ली ना करें|

(45) किसी पर झूटा इल्ज़ाम व तोहमत ना लगाएँ|

(46) लड़ाई झगड़े से बचें|

(47) गाली गलोज ना करें|

(48) किसी धोका ना दें|

(49) मुख़ालफ़त से बचें|

(50) मौत और क़ब्र को याद रखा करें|

(मलख़्ख़सन अज़ कलाइदुल जवाहिर, सिर्रुल असरार, ग़ुनयतुत तालिबीन, बहजतुल असरार वग़ैरह)

अख़ीर में बारगाहे क़ाज़ियुल हाजात में दुआ गो हूँ कि मौलाए पाक अपने महबूबे पाक साहिबे लौलाक सय्याहे अफलाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफैल हज़रत ग़ौसे पाक के मरक़दे मुनव्वर पर रहमत व अनवार की बारिशें बरसाए| उन के

दरजात बुलंद फरमाए| और हमें उन की तालीमात पर अमल पैरा होने की भी तौफ़ीक़े ख़ैर मरहमत फरमाए|

आमीन| या रब्बल आलमीन

बिजाहिन्नबिय्यिल अमीन

सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही

व सहबिही वमन तबिअहुम अजमईन|